चक्रांत शिला, असाध्य वीणा

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-10)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

‘चक्रान्त शिला’, ‘असाध्य वीणा’

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-10)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

चक्रान्त शिला- **4**

मूल प्रेरणा, प्रतीकार्थ, कवि की मनोभूमि और पिएर-क्वि-वीर, दिव्य मौन की अनुभूति, कविताओं का रचना-स्थान और रचना-काल, केन्द्रीय भाव-विराट् का भावन, महाकाल की लीला, तू काव्य:सदा, वेष्टित यथार्थ, 'प्रकाश से पारावर तक' जीवन का लक्ष्य, कितनी लघु अंजली हमारी-आध्यात्मिक चेतना।

असाध्य वीणा- **32**

कथा का आधार, मूल कथा में निहित प्रतीक, दिव्य संगीत का भावन, कला/कविता आत्म-सम्पर्ण और आत्म शोध है, कला/कविता निरंतर होने की-आत्मोत्सर्ग की प्रक्रिया है, कविता/कला-माँ का दुलार-आशीर्वाद,

'संस्पर्श वृहत् का'।

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

अभिव्यक्ति-विधान

तद्भव/बोली के शब्द/पद

बिम्ब विधान

प्रकृति से उठाए गए बिम्ब

मिश्रित बिम्ब-योजना, प्रकाश का बिम्ब

रात का बिम्ब

विराट् को रूपायित करने वाले बिम्ब

विराट् बिम्ब,

काल का बिम्ब,

मनोभावों के बिम्ब, संगीत के बिम्ब, ध्वनि-बिम्ब, वात्सल्य-बिम्ब लय युक्त गति, कुछ विशिष्ट प्रयोग,

वनस्पति-वृक्ष, पक्षी-पशु

चक्रान्त शिला

मूल प्रेरणा : 'चक्रान्त शिला' की मूल प्रेरणा अज्ञेय को पेरिस के दक्षिणी प्रदेश में एवेलोन से चार किलोमीटर दूर 'पेयर मुआर की कुटिया' और उसके आस-पास के वन्य प्रदेश में स्थित बेनेडिक्टी संप्रदाय के एक मठ में मिली। पेयर मुआर एक ईसाई संत थे और उन्होंने अपने हाथ से एक-एक पत्थर बीनकर एक कुटिया और मठ का निर्माण किया था। अज्ञेय को इस मठ में एकान्त वास और एकान्त साधना का अवसर मिला था। इस मठ में बेनेडिक्टी संप्रदाय के ईसाई सन्यासी (मंक) रहते थे। अज्ञेय के शब्दों में-

'नये मठ के कलापूर्ण प्रवेश-द्वार के किवाड़ पर मानो मौन का संकेत करती हुई ईसा की काष्ठ मूर्ति है।'[32]

प्रतीकार्थ : अज्ञेय शब्दों में : 'स्थान के नाम से मठ का नाम 'पिएर-क्वि-वीर'है जिसका अर्थ है 'घूमने वाला पत्थर। यह नाम एक बहुत प्राचीन चट्टान का था जो ईसाइयत के प्रवेश के पहले से पवित्र समझी जाती थी। एक प्रस्तर-खण्ड पर सन्तुलित यह शिला प्रकृति का एक आश्चर्य तो थी ही, मसीही धर्म के आने से पहले स्थानीय सर्वेश्वरवादी धर्म की बलि-पीठिका भी थी ।'[33]

'पिएर-क्वि-वीर'। वह पत्थर जो घूमता है। चक्रमित शिला। चक्रान्त शिला। चक्रान्त: जो संक्रमण करके फिर लौट-लौट कर आता है, वह कात के अतिरिक्त क्या है ? समय की शिला :

समय की शिला पर मधुर चित्र कितने,

किसी ने बनाये किसी ने मिटाये। - शम्भू नाथ सिंह

चक्रान्त शिला : समय की शिला : युगों के आवतन का क्रम जिस पर धर्म-सिद्धान्त की प्रतिमा

---

[32] भवन्ती पृष्ठ, 65

[33] वही पृष्ठ, 60

अडिग खड़ी है। धर्म काल जित है। इसी लिए बुद्ध ने धर्म के शाश्वत भाव, और चक्रमण के काल-सापेक्ष्य भाव को एक कर के धर्म-चक्र की उद्भावना की थी-जो घूमता भी है ओर स्थिर भी है-यहाँ घूमती हुई शिला पर सनातन श्रद्धा की प्रतिमा है' -[34]

कवि की मनोभूमि और पिएर-क्वि-वीर : पिएर-क्वि-वीर की दिगंत व्यापी शांति के संबंध में अज्ञेय लिखते हैं- 'इस प्रकार मठ का नाम, जो वास्तव में केवल स्थान का नाम है, एक प्रतीकार्थ ग्रहण कर के मेरे सम्मुख आता है ओर प्रतीक की सत्ता निरन्तर नये-नये बिम्ब मूर्त करती रहती है। मठ के आस-पास की वनभूमि में अकेला घूमता हूँ तो ये बिम्ब उस 'अकेलेपन को मर्यादित किये रहते हैं। कोठरी में अकेला बैठता हूँ तो नीरव-वायुमंडल में वे मँडराते रहते हैं। कुछ लिखता हूँ तो उसमें उनका स्वर बोलने लगता है। उस लिखे हुए की कभी झरने के पास बैठकर मानस आवृत्ति करता हूँ तो उनके स्वर झरने की कल-कल में उसे मुखर भाव से दोहरा जाते है, कभी, शायद, यह लिखा हुआ भी प्रकाश में आवे। '[35]

दिव्य मौन की अनुभूति : योरोपीय सभ्यता और संस्कृति, साहित्य और कला के प्राय: सभी आन्दोलनों की प्रेरणा-भूमि पेरिस शहर रहा है। योरोपीय सभ्यता की सारी विकृतियों का केन्द्र भी पेरिस शहर है। इसलिए अज्ञेय ने अपनी फ्रांस-यात्रा का विवरण 'तो यह पैरिस है' शीर्षक के अंतर्गत दिया है। लेकिन अज्ञेय का उद्देश्य योरोपीय, भौतिकतावादी सभ्यता की चकाचौंध और आपा-धापी के बावजूद, संस्कृति की अंतरंग झाँकी का दर्शन करना था, ईसाइयत के मर्म तक पहुंचना था, इस लिए दक्षिणी पेरिस के निकट बेनेडिक्टी संप्रदाय के एक मठ 'पिएर-क्वि-वीर' में उन्होंने कुछ दिनों के लिए एकान्त-वास किया। इसका विवरण उन्होंने 'एक दूसरा फ्रांस' (एक बूँद सहसा उछली) शीर्षक के अंतर्गत दिया है।

अपने अनुभव-क्रम में अज्ञेय ने लिखा है-मठ से विदा होते समय उन्हें पेयर प्लासीड और पेयर

---

[34] वही पृष्ठ, 63

[35] वही पृष्ठ, 63, 64

जेवियर से आशीर्वाद मिला और बड़े सहज और भावूपर्ण लहजे स्थविर पेयर ज़ेवियर ने कहा था 'प्रे फ़ार मी (मेरे लिए प्रार्थना करना)'। यह कोई साधारण बात नहीं है। अज्ञेय के अनुभव उन्हीं के शब्दों में -

'बेनेडिक्टी संप्रदाय में आग्रह प्रार्थना पर है। एक प्रकार से यह भारतीय चिन्ता-धारा के अधिक निकट है; वह सेवा द्वारा दूसरे के कल्याण की अपेक्षा साधना द्वारा आत्मोन्मेष नहीं तौ कम से कम भगवत्कृपा की आशा करता है।'[36]

'वास्तव में इस समूचे प्रसंग का स्थान एक यात्रा वृत्तांत में नहीं है। न ऐसे विषयों की अधिक चर्चा करके मैं उस दिव्य मौन का अपमान करना चाहता हूँ जो पियर-क्वि-वीर में मुझे मिला था -

'पर सबसे अधिक मैं
वन के सन्नाटे के साथ मौन हूँ मौन हूँ
क्योंकि वही मुझे बतलाता है कि मैं कौन हूँ,
जोड़ता है मुझको विराट् से
जो मौन, अपरिवर्त्त है अपौरुषेय है
जो सबको समोता है। '

'अन्त में उस आशीर्वाद का उल्लेख कर देना चाहता हूँ जो चलते समय पाल मासिन्यों से मिला-विशेषतया इसलिए कि पेरिस एक अर्थ में 'दुनिया का सबसे अकेला शहर' है। मासिन्यों ने जब कहा, 'मैं तुम्हारे लिए आत्मा के इसी अकेलेपन की कामना करता हूँ' -तब उनका लक्ष्य उस अकेलेपन की ओर नहीं था जो पैरिस दे सकता है और जो मनुष्य को कंगाल बना देता रैक-बल्कि उस निःस्वता की जिसका गान रहस्यवादियों ने किया है और जिसके बोरे मैं बाइबिल में भी लिखा है, ब्लेसेड आर द पुअर इन स्पिरिट, फॉर देयर्स इज द किंगडम ऑफ हैवन।' उनके आशीर्वाद से वह अकेलापन रऔर वह कंगाली मुझे मिल

[36] वही पृष्ठ, 60